गन्ना को अपनाया - सफलता की राह पाया

कृषक का नाम	:	**सुखराम नाग पिता श्री सुकरू नाग**
पता	:	**मालगांव, वि.ख. बकावंड, जिला– बस्तर (छ.ग.)**
मोबाइल	:	**09691202665**
आयु	:	**55 वर्ष**
जाति	:	**धुरवा (अनुसूचित जनजाति)**
षिक्षा	:	**प्रौढ़ षिक्षित**
कृषि अनुभव	:	**35 वर्ष**
कृषि भूमि	:	**6 एकड़ (उच्चहन भूमि – 5 एकड़)**
सिंचाई	:	**3 एच.पी. ट्यूबवेल**
मुख्य फसलें	:	**गन्ना, मक्का, धान एवं सब्जियों**
पशुधन	:	**4 बैल, 2 गाय**
समाजिक स्तर	:	**पूर्व पंच एवं सहकारी समिति सदस्य**
सम्मान	:	**नहीं**
परिवार सदस्य	:	**09**

अंगीकृत उन्नत तकनीकी का विवरण :–

कृषि विज्ञान केंद्र, बस्तर ने ग्राम मालगांव को फसल विविधीकरण के अंतर्गत वर्ष 2003 में अंगीकृत किया । उस समय कृषक सुखराम गांव में बड़े कृषकों के खेतों पर मजदूरी करता था । लेकिन कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्षन में जनपद कार्यालय बकावंड स्वर्ण जंयती एवं रोजगार योजना के तहत 4 एच.पी. का ट्यूबवेल खनन कराया गया । उसके बाद कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा विभिन्न विस्तार गतिविधियों को संचालित कर सुखराम को उन्नत कृषि तकनीक से अवगत कराया –

1. प्रषिक्षण, गन्ना, मक्का, धान एवं सब्जियों पर प्रषिक्षण
2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्षन : उपरोक्त फसलों के प्रदर्षन वैज्ञानिकों के अनुसार स्वयं कियान्वित कियें
3. संस्था के प्रक्षेत्र पर एवं अन्य प्रगतिषील कृषकों के खेतों का भ्रमण
4. किसान मेला एवं प्रदर्षनी : सुखराम को राज्यस्तरीय किसान मेला एवं प्रदर्षनी में ले जाकर उन्नत तकनीक से अवगत कराया।

उन्नत तकनीक का अंगीकरण :–

1. गन्ना, मक्का, धान एवं सब्जियों की उन्नत एवं संकर किस्मों की जानकारी एवं अपनाना ।
2. बीजोपचार कीट व्याधियों से बचाव हेतु फंफूदनाषक एवं कीटनाषक दवा का उपयोग करना।
3. बुवाई तकनीक : निष्चित दूरी पर कतार एवं रोपाई विधि से खेती कर रहा है ।
4. खाद एवं उर्वरक का प्रयोग :– खाद एवं उर्वरक का समुचित मात्रा में प्रयोग करना । इससे पहले केवल गोबर खाद का प्रयोग करता था ।
5. कीट एवं रोगों का नियंत्रण :– सभी फसलों के कीट–रोगों की पहचान कर उनका रासायनिक दवाओं का प्रयोग कर नियंत्रण कर रहा है परंतु वर्ष 2003 से पहले कीट–व्याधियों को कोई नियंत्रण नही करते थे एवं उसे देवी–देवाताओं की नाराजगी माना जाता था ।

अंगीकृत उन्नत तकनीक की उपयोगिता :–

कृषक सुखराम ने उन्नत कृषि तकनीक को अपनाकर उत्पादन एवं आय में काफी प्रगति की है साथ ही रोजगार के अवसर सृजन कर रहा है । आय बढ़ने से रहन–सहन एवं खान–पान में सकारात्मक बदलाव आया है । अपने छोटे बच्चों (नाती) का अच्छे स्कूल में पढ़ाई भी करा रहा है ।

उन्नत तकनीक का प्रभाव एवं उपयोगिता :–

विवरण	अंगीकृत के पूर्व की स्थिति (2006)				अंगीकृत के बाद की स्थिति (2011)			
	रकबा एकड़	किस्म	औसज उपज क्विं/एकड़	शुद्ध आय रू./एकड़	रकबा एकड़	किस्म	औसज उपज क्विं/एकड़	शुद्ध आय रू./एकड़
खरीफ								
धान	01	देशी	06	1800	1.5	एम.टी.यू 1010, कर्मा मासूरी	16	7600
मक्का	0.25	देशी	4.5	1500	2	संकर	18	8500
गन्ना	02	रागी, रामतिल, कुल्थी	02	1000	2	गन्ना अंका पल्ली	200	15000
सब्जियॉ गोभी, बैंगन, टमाटर, भिंडी	बाड़ी मे 0.10	देशी	2–3	800	0.5	उन्नत	35–40	25000
रबी								
सब्जियों					1.5	उन्नत/ संकर	40–50	30000
मक्का					1.00	संकर	22	11000
गन्ना	वार्षिक फसल							
फसल सधनता	**100 %**				**256 %**			

वर्ष 2003 के पूर्व कृषि एवं मजदूरी से कुल वार्षिक आय :– लगभग 12,000=00 रू. थी

वर्तमान में सुखराम की शुद्ध वार्षिक आय :– 1,26,000=00 रू. है

वर्ष भर में परिवार के सदस्यों के अलावा गांव के अन्य लोगों को लगभग 1000 मानव दिवस रोजगार उपलब्ध करा रहा है।

मुख्य बिंदू :–

1. वार्षिक आय : 12,000=00 रू. से बढ़कर 1,26,000=00 तक पहुॅच गई है।
2. गांव के अन्य लोगों को लगभग 1000 मानव दिवस रोजगार उपलब्ध करा रहा है।
3. आकाषवाणी एवं दूरदर्षन के माध्यम से अपने अनुभव अन्य दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुॅचा रहा है।
4. जलग्रहण क्षेत्र एवं अन्य कृषकों को अपनी प्रगति से अवगत करना एवं उन्हें भी प्रेरित करना ।
5. मोबाइल, टी.वी., घरेलू समान में वृद्धि।
6. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में वृद्धि।
7. कृषि उत्पादों को मण्डी में अच्छी विक्रय दरों पर बेचना।

कृषक सुखराम द्वारा उन्नत कृषि तकनीक के अंगीकरण की एक झलक (वर्ष 2003 से 2011)